Page No.
Date

नाव वायदंडे प्रियंका दादा
कला व वाणिज्य महाविद्यालय
वडूज

9/10

Roll No 451 हिंदी सराव प्रश्नपत्रिका।
Sub
2019-20
पेपर प्रयोजनहिंदी साहित्य
का इतिहास

रितीकालीन राजनैतीक तथा सामाजिक परिस्थीतीयों का विवेचन कीजीये.

भाषा साहित्य के निर्माण में युगीण वातावरण का विशेष योगदान होता है युगीन वातावरण तत्कालीन राजनीति समाज संस्कृति, साहित्य और कला आदिके मुल्योंद्वारा निर्मीत होता है अतः युग विशेष के अध्ययन के लिये तत्कालीन परिस्थीतीयों का ज्ञान होना अनिवार्य हो जाता है अतः तत्कालीन परिवेश के मुल्यांकन के लिये राजनैतीक परिस्थीतीयाँ व सामाजिक परिस्थीतीयाँ धार्मिक परिस्थीतीयां सांस्कृतिक परिस्थीतीयाँ साहित्यीक परिस्थीतीयों को जानना आवश्यक होता है

1] राजनैतीक परिस्थीतीयाँ

राजनीति की दृष्टी से यह काल मुगलों के शासन के वैभव के चरमोत्कर्ष और उसके बाद उत्तरोत्तर ह्रास पतन तथा विनाश का युग जा सकता है सम्राट अकबरकी सहिष्णुता के कारण हिंदु और मुसलमानो में सामंजस्य स्थापित हो चुका था और उसके परिणाम स्वरुप व्यक्तिवादी निरंकुश राजतंत्र का बोलबाला रहा जहाँगीर की सुरा और सुंदरी के प्रति अदम्य लालसा उसके उत्तराधिकारीयों को मिली हुई थी शहाजहाँ में कुछ और अकबर जैसी धार्मिक सहिष्णुता और दुसरी और सांस्कृतिक तथा कलागत उदारता थी वह समय शांती और समृद्धी का था इतिहास की दृष्टी से वह सुवर्णयुग था। ऐसी परिस्थीती में शहाजहाँ मे प्रदर्शन प्रवृत्ति का उभरना कोई अनोखी बात नही है इस प्रवृत्ति का प्रभाव रीति साहित्य पर अधिकपड़ा है शहाजहाँ के रोगग्रस्त हो जाने पर अपने बडे भाई दारा की

5

की हत्या करके औरंगजेबने अमानुषीय कृत्य किया जिससे ज
विक्षुब्ध हो उठी औरंगजेब की राज्य विस्तार लिप्सा से देशी न
बौखला उठे उसकी धार्मिक असहिष्णुता से जनता ग्रस्त थी
मृत्यु के पस्चात उनके उत्तराधिकारी अयोग्य नपुंसक असमर्थ
एवं पंगु निकले केंद्रीय सत्ता की नीति के साथ अनेक नरेश स
होगए और शाही खानदान के हरमों से होड़ लेने लगे
नादिरशाह तथा अहमदशाह अब्दाली के आक्रमणसे मुगल
की रीढ की हड्डी ही टूटगई आंतरिक वैमनस्य का लाभ बक्स
लड़ाई में अंग्रेजी ने ले लिया और मुगल साम्राज्य की इतिश्री
औरंगजेबके उत्तराधिकारी अंग्रेज तथा अमीरों के हाथकी क
बन गए जहाँ दाराशाह जैसे लोग हमेशा दर्पण और कंघी
थे उसने अपना समस्त साम्राज्य लालकुँवर नामक वेश्या को
था फलस्वरुप वेश्या के सम्बन्धी तबलचिये आदि ऊच्च औ
बनाए गए जिन्होंने जनता पर मनमाने अत्याचार किए मह
तो मदिरा नाचरंग आदि में अपना समय व्यतीत करनेवाला
बादशाह था उसका उधमबाई नामक वेश्या से प्यार था
उसका पुत्र उत्तराधिकारी भी बना ऐसी परिस्थीती के कार
इतिहासकार ने लिखा है गिद्धों के नीडो मे उल्लु रहने लगे
बुलबुलों का स्थान कागों ने ले लिया इस प्रकार यह काल स
की दृष्टि से घोर नैतिक पतनकी पराकाष्ठा की निराशा औ
का काल था.

सामाजिक परिस्थीतीयाँ :-
सामाजिक दृष्टिसे भी इस काल को घोर अध पतन
कहना चाहिए। इस युगमे सामंतवाद का बोलबाला था यथा राजा
की उक्ति इस कालपर पुर्णतया चरितार्थ होती थी इस यु
की उक्ति इस कालपर पुर्णतया चरितार्थ होती थी इस युग को सामाजिक व्यवस्था का
स प्रधान युग कहा जासकता है सामाजिक व्यवस्थाका
बादशाह था और उसके अधीन मनसबदार अमीर उमराव
बाद ओहदों के अनुसार दूसरे अधिकारी कर्मचारी आते थे
कार्य अपने ऊपर वालों को प्रसन्न करना था और नीचे वालों क
संपत्ति समझते उनका अस्तित्व केवल इनके लिए माना जा

और यह शासकोंका वर्ग और दूसरी ओर शासितोंका वर्ग
थी जिसमें कृषक श्रमिक सेठ साहूकार दुकानदार व्यापारी थे
कृषक श्रमजीवीयों का सभी शोषण करते थे उन्हे किसी न किसी को
बेगार करनी पडती थी न करनेपर कोडों की मार सहनी पडती थी
गरीबों की आर्थिक स्थिती युद्ध अतिवृष्टी अनवृष्टि सेनाओं के
प्रयाग आदि के कारण अत्यंत शोचनीय थी शासक एवं सम्पन्न वर्ग
बिना श्रम किए ही सम्पन्न था
जनसाधारणको चिकीत्सा शिक्षा संपत्ती रक्षा आदि का भी
इस काल में कोई प्रबंध न था ऐसी शोचनीय स्थितीमें लोग नैतिक
मुल्यों से रहित और भाग्यवादी रहे तो कोई आश्चर्य की बात नही
नारी को संपत्ति मानकर उसका भोग करना ही जीवन मंत्र बन गया
था विलास के उपकरणों की खोज सुरा सुंदरी और संगीत के इर्द
गिर्द चक्कर काटना उसकी आराधना करना अभिजात वर्ग का शगल
था कन्या का अपहरण न हो जाए इस डरसे बालविवाह का प्रचलन
रहा शासकोंकी कामुकतासे बचने के लिए पर्दा प्रथा प्रचलित होगई
शासकों के यहाँ सुंदर रक्षिताओं की भरमार थी अनेक पत्नीयों के होते
हुए भी वेश्यागमन को प्रतिष्ठा प्राप्त हुई थी सपत्नीयोंके कारण
पति से पुर्ण प्रेम प्राप्त न होने के कारण परपुरुष से प्रेमाराधन चलत
था राजमहलों में भी राजकुमार राजकुमारियाँ शहजादियों की हाल
विलासिनी माताओं की देखरेख के अभावमें सामान्य कर्मचारियों
अथवा भृत्यों के साथ प्रेम व्यापार चलते थे
इस प्रकार सभ्यता और संस्कृति के ह्रास के साथ साथ इस
युग को महान आर्थिक संकट को भी देखना पडा.

9/10

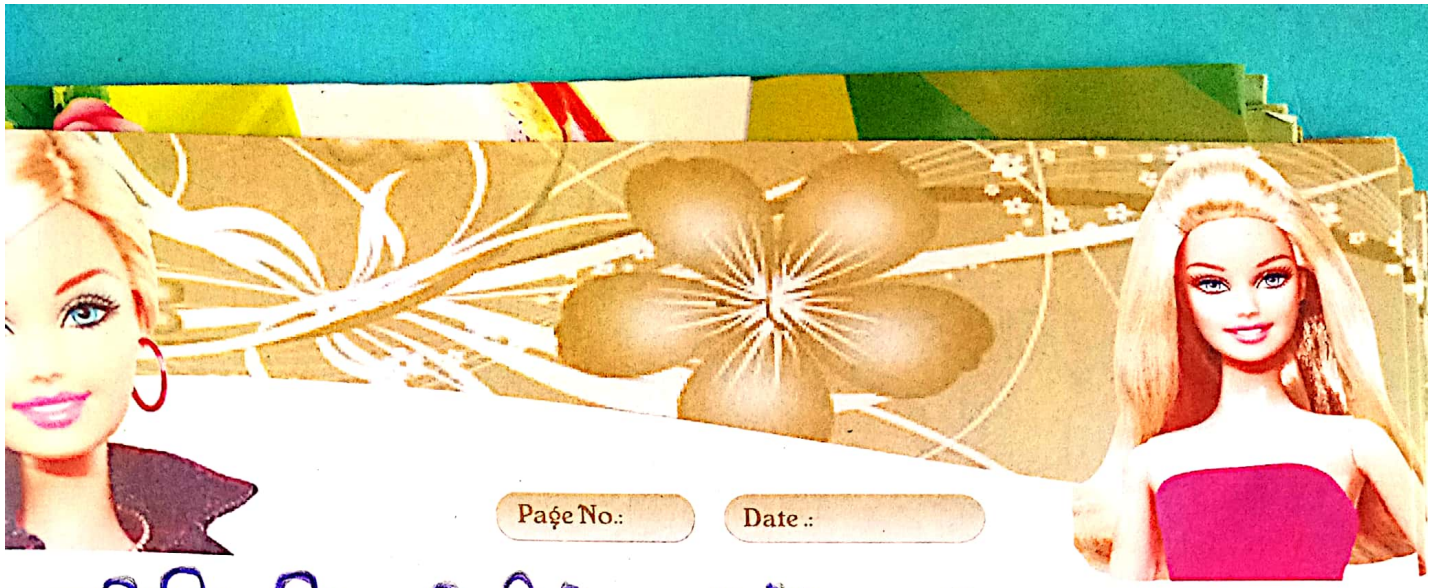

रितिकालीन प्रातिनिधीक कवियोंका परिचय

केशवदास

रीतिकालीन प्रमुख कवियों के अंतर्गत प्रवर्तक कवि के रुपमें आचार्य केशवदास का उल्लेख किया जाता है वे भक्तिकालीन कवि होने के कारण एक भक्त और एक प्रबंध दोनो रुपोमे वे अपना एक विशिष्ट स्थान रखते है वे रितीबद्ध कवि थे उनके आचार्यत्व और कवित्व को लेकर आजतक विद्वानो में विवाद है वे पहले ऐसे कवि है कि जिन्होने काव्यशास्त्र के सभी अंगोपर प्रकाश डाला उनका सामान्य परिचय इसप्रकार

जन्मतिथी / जन्मस्थान :-

केशवदास का जन्म 1612 में एक संपन्न ब्राम्हण परिवार में हुआ हिंदी साहित्य के इतिहासके कुछ विद्वानो ने उनकी तिथी 1618 मानी उत्तर भारतके ओरछा इस स्थानको उनका जन्मस्थान माना जाता है उससमय ओरछा राजनितीक तथा साहित्य का एक प्रमुख केंद्र था

पारिवारिक स्थिती :-

केशवदास के पिता काशीनाथ तात्कालीन युगके संस्कृत के बोहोत बडे पंडित उन्होने शीघ्रबोध नाम की रचना लिखकर काव्यजगत में अपना नाम कमाया था वे राजा मधुकर शाह के दरबार के प्रमुख कवि थे राजा उनका विशेष आदर सम्मान करता था केशवदास उस परिवारसे संबंधीत थे जहाँ सेवक भी संस्कृत बोलते थे.

आश्रयदाता / गुरु :-

संस्कृत भाषा के प्रकांड पंडित ब्रज भाषामें काव्य लिखते थे केशवदास ओरछा साम्राज्य के महाराज इंद्रजित के दरबार में रहते थे उस दरबार में उनका बोहोत मान सम्मान होता था केशवदासकी प्रतिभापर प्रसन्न होकर महाराजने २१ गाँव दान में दिये थे रितीकाल के अन्य एक प्रमुख कवि

Scanned with CamScanner

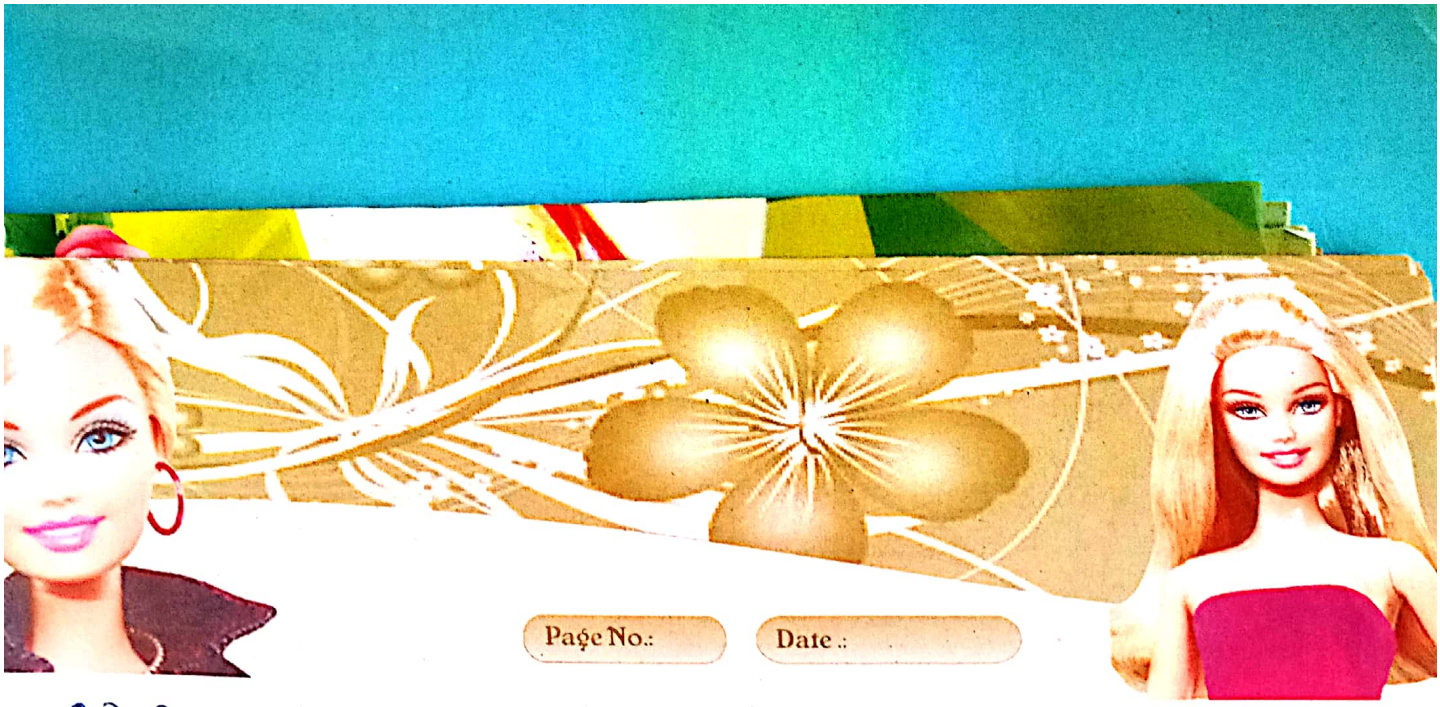

Page No.: Date.:

हारी के वे गुरु थे वे बिहारी के पिता भी थे अपने पुत्र को उन्होंने एक विद्वान
कवी के रूप में विकसीत किया था।

रचनाएँ !-

आचार्य केशवदासने अपने साहित्यीक जीवनमें कुलमिलाकर नौ रचनाएँ लिखी

1) रसिकप्रिया
2) कविप्रिया
3) रामचंद्रिका
4) रतनबावनी
5) वीरसिंह देवचरित्र
6) विज्ञान गीता
7) जहांगीर जसचंद्रिका
8) नखशीख
9) छंदमाला

रसिकप्रियामें रससंबधीत ग्रंथ है कविप्रिया में अलंकार निरुपण है राम चंद्रिका में रामके
शीश का गुणगान रामायणके आधारपर किया है विज्ञान गीतामें अध्यात्मिक गीता का
नि किया है छंदमालामें छंदसंबधी शिक्षा का वर्णन किया है वीरसिंह देव चरित्र में
जा वीरसिंह रतनबावनी में राजा रतन और जहांगीर जस चंद्रिका में राजा
हाँगीर आदिके चरीत्रों का विवेचन किया है नखशीख यह रचना शृंगाररस से
ंबधित है

व्यक्तीत्व !-

केशवदास स्वाभिमान गंभीरविचार सुखसंपन्नता आदि गुणों से युक्त
उनमे दानके प्रति किसीभी प्रकारकी लालसा नही थी राजा इंद्रजीत सिंह के विशेषकृपा
ात्र राजकवि थे साथ ही रसीक भावुक और अपने स्वामी के प्रति भक्ती रखनेवाले
ती परंपराके श्रेष्ठ कवि और आचार्य थे अपने बहु कृतित्व के कारण वे रिती
ाल के प्रवर्तक प्रणेता कवि बन गये संवत 1682 में उनकी मृत्यु हुवी हिंदी साहि
रितीकालमें एक आचार्य और एक कवि दोनो रुपों मे उनका स्थान महत्वपूर्ण

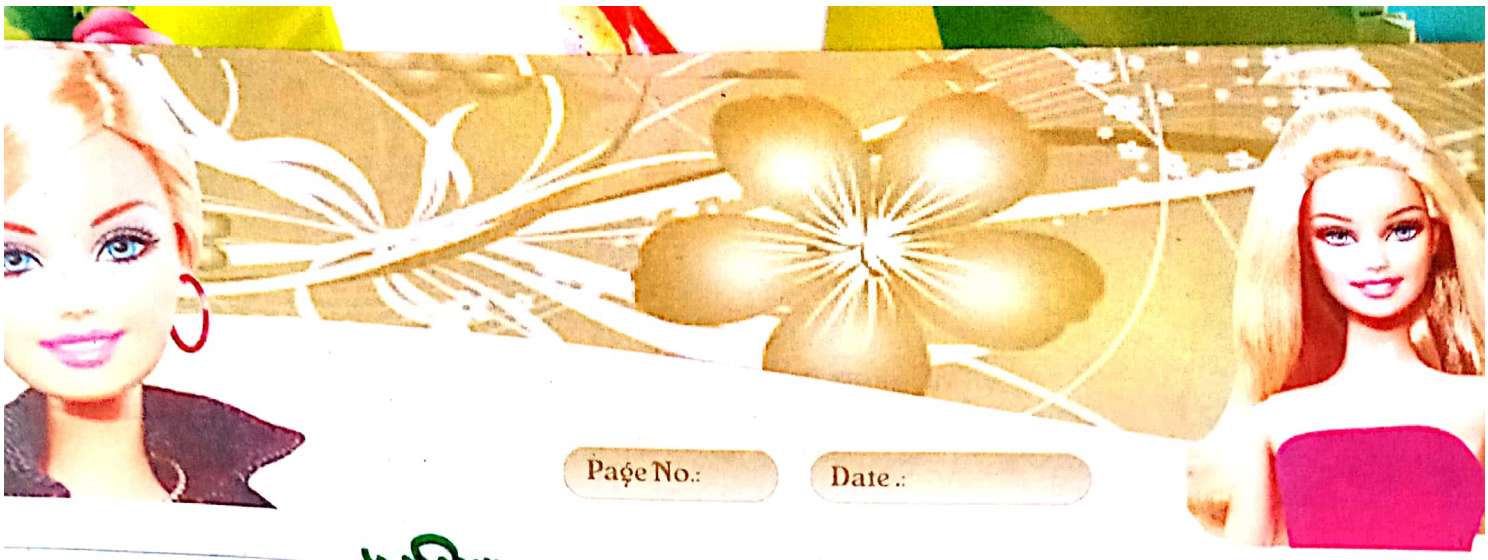

Page No.: Date.:

मतीराम

रीतीकालीन कवियो मे केशवदास के बाद मतीराम का स्थान अत्यंत महत्वपू
रीतीकाल में रस एवं अलंकार का निरुपण करने में जिन आचार्यों को सफलता मिली
उनमें से वो एक है कालखंड के अनुसार वे भी राजदरबारी कवि थे कई राजाओं के
दरबारो में उन्होने अपनी सेवाएँ प्रदान की उन्हे ललित एवं सरस रचनाओं का स्वामी
कहा जाता है इनका सामान्य परिचय इस प्रकार है.

जन्म एवं जन्मस्थान:- मतीराम का जन्म संवत 1667 मे उत्तरप्रदेश के कानपुर जिले के ती
र नामक गॉव में हुआ। उनके पिता का नाम रत्नाकर त्रिपाठी था मतीराम के तीन भा
आगे चलकर रितीकाल के विख्यात कवि केशवदास की तरह मतीराम का जन्म भी विद्वा
परिवार में हुआ था।

रचनाएँ :- मतीरामने आठ रचनाएँ लिखी

ललित ललाम 2] **रसराज** 5] **फुलमंजिरी** 7] **अलंकार**
छंदसारपिंगल 4] **मतीरामसतसई** 6] **लक्षणशृंगार** 8] **पंचशीखा।**

ऐसारी रचनाएँ काफी विख्यात हुयी. ललीत ललाम यह 100 अलंकारों के लक्षण और उदाहर
संबंधीत ग्रंथ रसराज इस रचना में शृंगाररस और नायिका भेद का विवेचन हुआ है
ग्रंथों की दृष्टी से यह महत्वपूर्ण रचना है साहित्यसार में अत्यंत संक्षिप्त रुप में ना
को स्पष्ट किया गया है लक्षणशृंगार में भाव विभावों का वर्णन किया है यह अ
होत छोटी है छंदसार पिंगल में तात्कालीन रितीकाल के छंदों का चित्रण हुआ है मतीराम स
की नीती और धर्म से संबंधित कुछ दोहों का निरुपण है अलंकार पंचशीखा मे आश्रयदा
प्रशंसाएँ लिखी गयी फुलमंजिरी मे काव्य के अंगों का वर्णन हुआ है साहित्यसार
कालीन साहित्यीक रचनाओं के आधार पर लिखा गया ग्रंथ है

Scanned with CamScanner

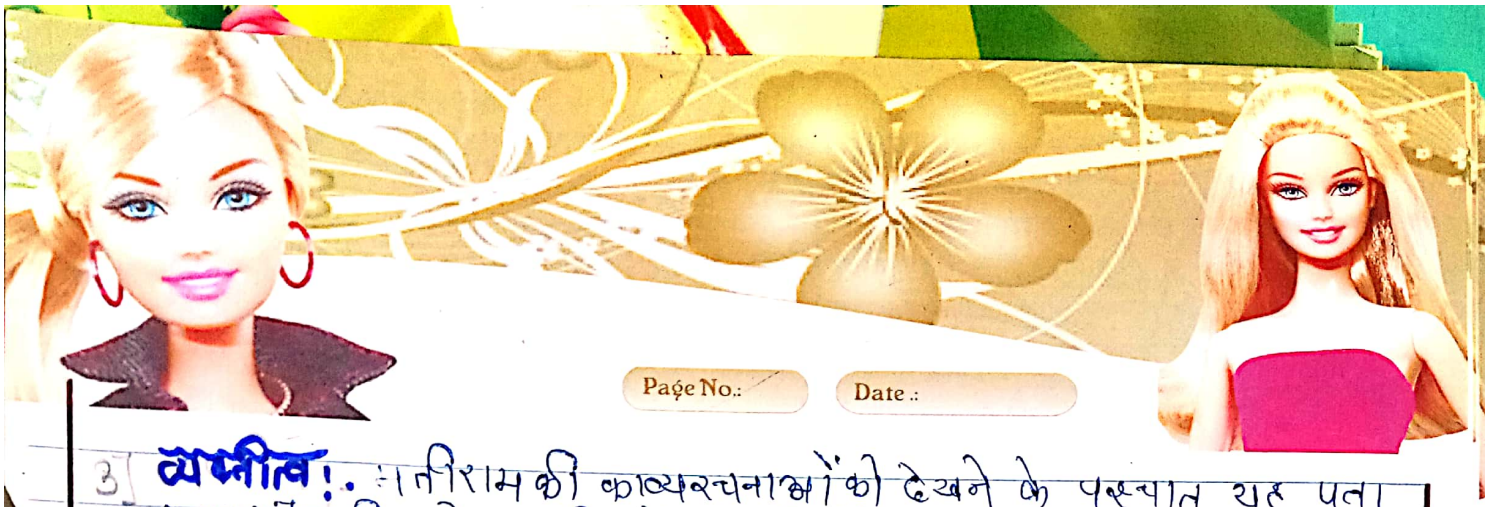

Page No.: Date :

3) **व्यक्तित्व**:- मतिराम की काव्यरचनाओं को देखने के पश्चात यह पता चलता है की उनके व्यक्तित्व में एक कवि और एक आचार्य इन दोनो रूपों का समन्वय हुआ है उनकी भाषा काफी सरस एवंम प्रवाहमयी है किंतु कुछ विद्वानों के द्वारा उनके ग्रंथों पर सदोषता का आरोप लगाया गया किंतु उनके उदाहरण लौकिक जगत के न होकर अलौकिक जगत के हो सकता है कि उनके ग्रंथो में मौलिकता की कमी होगी लेकीन उदाहरण मात्र सरस है उन्होंने अपने आपको आडंबरों से बचाया है उनकी भाषा बोधगम्य है उनकी काव्य रचना में दांपत्य एवं पारिवारिक जीवन का चित्रण सुंदर चित्र देखने को मिलता है उनके द्वारा किये गये भावों का वर्णन उनकी निरीक्षण दृष्टी और कवि हृदय का परिचय देता है उनका काव्य रस और भाव की दृष्टी से विषयानुरूप है मधुर शब्दों के प्रयोग से उनकी काव्यरचना अनुपम हदय की साक्षी होगयी जीवन की अनुभूती तथा विरह से युक्त व्यथा को उन्होने मार्मिक ढंग से व्यथित किया।

आचार्य देव

रितीकाल के अन्य प्रमुख रचनाकारों में आचार्य कवि देव का भी स्थान बोहोत महत्वपूर्ण है उनकी सबसे बडी विशेषता यह थी की उनकी रचनायें व्याकरण की दृष्टी से दोषपूर्ण है लेकीन शब्दावली की दृष्टी से अवर्णनीय है उन्होने अपनी रचना में जिन विषयों को लिया उसके तथ्यों का भी विवेचन किया देव का व्यक्तित्व एवं कृतीत्व इस प्रकार है.

1) जन्म जन्मस्थान जाती:- रितिकालीन श्रेष्ठ आचार्य देव का जन्म उत्तर प्रदेश के इटावा में संवत 1730-31 में हुआ उनके जन्मवर्ष को लेकर विवाद है कुछ विद्वानो के मतानुसार

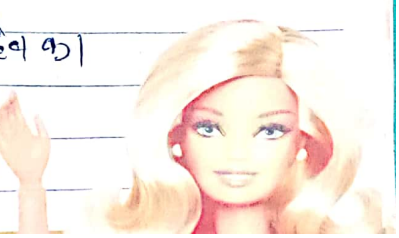

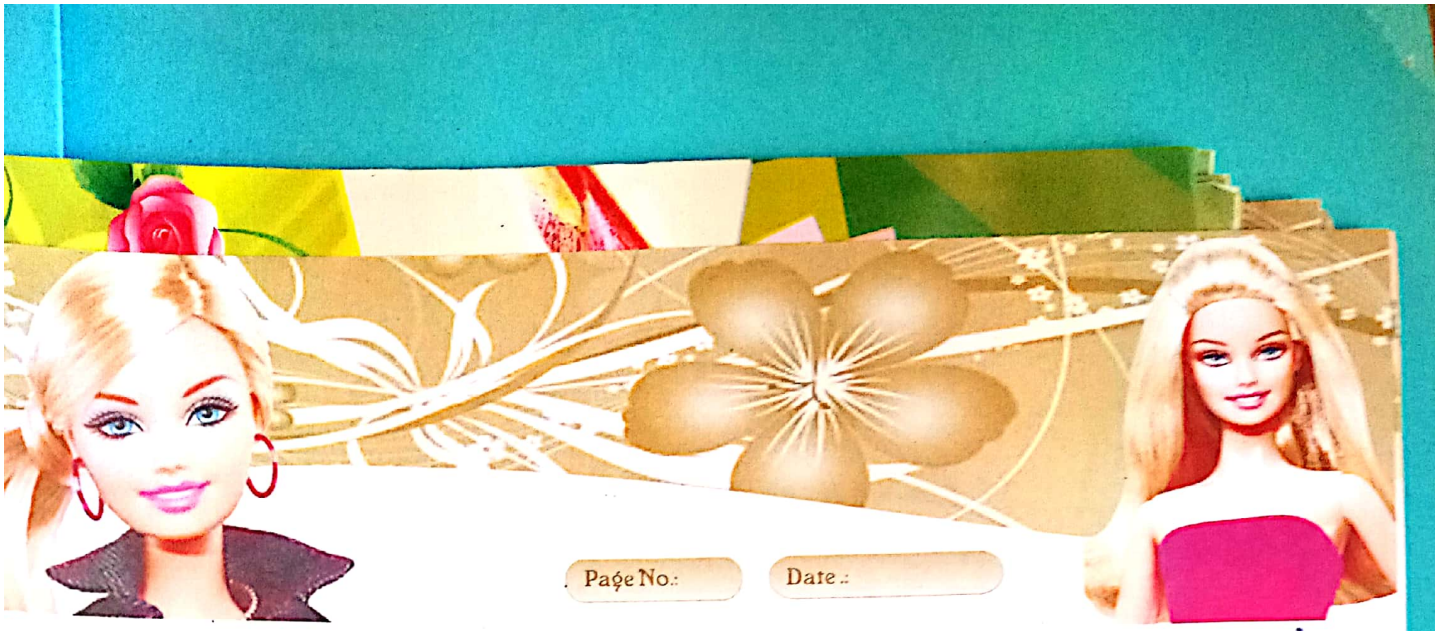

उनका जन्म 1730 में हुआ तो कुछ विद्वानों के अनुसार उनका जन्म 1731 में हुआ है जाती से कश्यप गोत्र के ब्राह्मण थे उनका पुरा नाम देवदत्त था देव यह उनका उपनाम को रितीकालमे सभी विद्वानों ने देव नामसेही पुकारते थे.

2] राजाश्रय :- अपना निर्वाह करने के लिये इन्होने कई राजा और महाराजा तथा उनके राजदरबारों का आश्रय लिया उनकी विशेषता यह थी की कई शासकों के दरबार में इन्होने अपनी साहित्य साधना किथी उनके जो आश्रयदाता थे वे इस प्रकार आजम मशाह भवानीदत्त वैश्य कुशलसिंह उद्योतसिंह राजा भोगिलाल सुजान मणी अकबर खाँ आदि तत्कालीन शासकों के वे चहेते साहित्यकार थे.

3] मृत्यु :- मृत्यु के समय देवकी उम्र 94-95 सालकी थी संवत 1824-25 यह उनकी मृत्यु तिथी मानी जाती है उनकी मृत्यु कैसे हुयी इस बारेमें इतिहास में कोई उल्लेख नही हुआ है

4] प्रसिद्ध रचनाएँ :- कवि देवद्वारा साहितीक दृष्टीसे कुल 72 रचनाएँ लिखी गयी ऐसी मान्यता है किंतु हिंदी साहित्य के इतिहास में उनके द्वारा प्राप्त रचनाओं की संख्या सिर्फ 18 है **1] भाषाविलास 2] अष्टयाम 3] प्रेमतरंग 4] कुशलविलास 5] देवचरित्र 6] काव्यरसायन**

इसमें से अधिकतर रचनाये रस रसों के प्रकार शृंगार नायिका भेद अलंकार प्रेम संगीत काव्य स्वरूप शब्दशक्ती रितीयुग भगवान श्रीकृष्ण अध्यात्म ब्रह्मतत्व जीवन की क्षणभंगुरता आदि कई साहित्तीक विषयों में संबंधित है

समीक्षा :- देवने अपनी सभी रचनाओं में काव्यदत्त अंगों का विवेचन किया आचार्य की अपेक्षा देव अधिक सरावत है इस प्रकार रितीकालीन आचार्य कवि देव मौलिकता स्पष्टता रमणीयता मार्मिकता आदि दृष्टीयों से रीतीकालीन एक महत्वपूर्ण कवी सिद्ध हुये है,

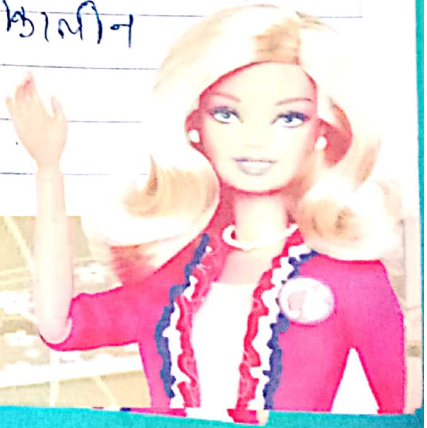

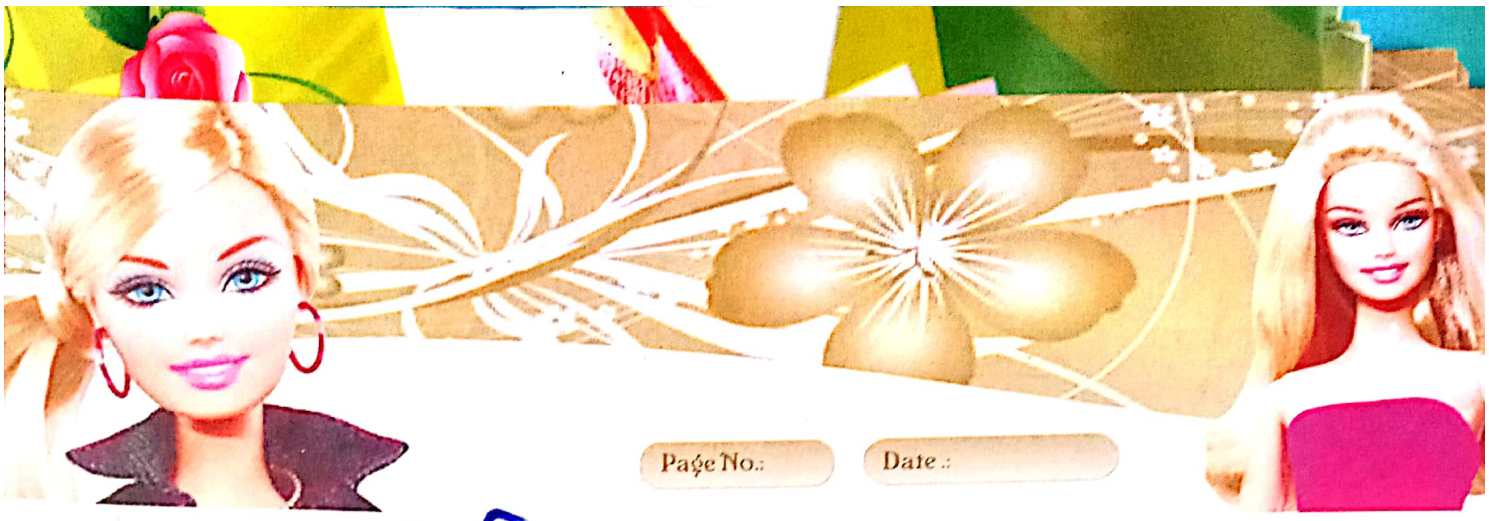

बिहारी

(1) जीवनवृत्त- बिहारी हिंदी साहित्य के लोकप्रिय कवि है इनका जन्म लगभग सं 1652 तथा मृत्यु लगभग सं 1720 में हुई थी वे माथुर चौबे थे उनके पिता का नाम केसोराय या केशवराय था कुछ विद्वान रीतिकाल के आचार्य केशवदास को इनके पिता मानते है इनके एक भाई और बहन होने का उल्लेख मिलता है ग्वालियर, मथुरा और वसुआगोविंदपुर में से इनका जन्मस्थान ग्वालियर आदि को उचित लगता है बिहारी के पिता ग्वालियर छोड़कर ओरछा नरेश के पास चले गए थे जहाँ उन्होंने काव्यग्रंथों का अध्ययन किया वृंदावन से संस्कृत तथा प्राकृत की शिक्षा प्राप्त की संगीत का भी अध्ययन किया वृंदावन में शाहजहाँ से भेंट हो गई और वे आगरा चले गए शाहजहाँ के पुत्रजन्मोत्सव के अवसर पर आए राजाओं ने उनकी वार्षिक वृत्ति बाँध दी थी इस सिलसिले में वे मिर्जाराजा जयसिंग के दरबार में पहुँच गए थे जब राजासाहब अपनी नई रानी के प्रेम में पूरी तरह से आसक्त हो गये थे. बिहारी के दोहे ने राजासाहब की आँखे खोल दि

काव्यसमीक्षा- बिहारी का एक ही ग्रंथ मिलता है बिहारी सतसई किंतु यह हिंदी के श्रेष्ठतम ग्रंथो में से एक है यह मुक्तक काव्य है मुक्तक के लिए जीवन का आधार फलक सिमीत होता है मुक्तक काव्य के लिए भाषा की समास शक्ति और कल्पना की समाहार शक्ति का होना अनिवार्य होता है उसे अपने खंड दृश्यों में रस की अजस्त्र वेगवती धारा प्रवाहित करनी पड़ती है जो पाठकों पर स्थायी प्रभाव की उत्पन्न कर चमत्कृत कर दे मुक्तक के सभी गुण बिहारी के काव्य में विद्यमान है सतसई का एक एक दोहा उज्वल रत्न है दोहे के सिमीत क्षेत्र में उन्होंने गागर में सागर भर दिया है.

Scanned with CamScanner

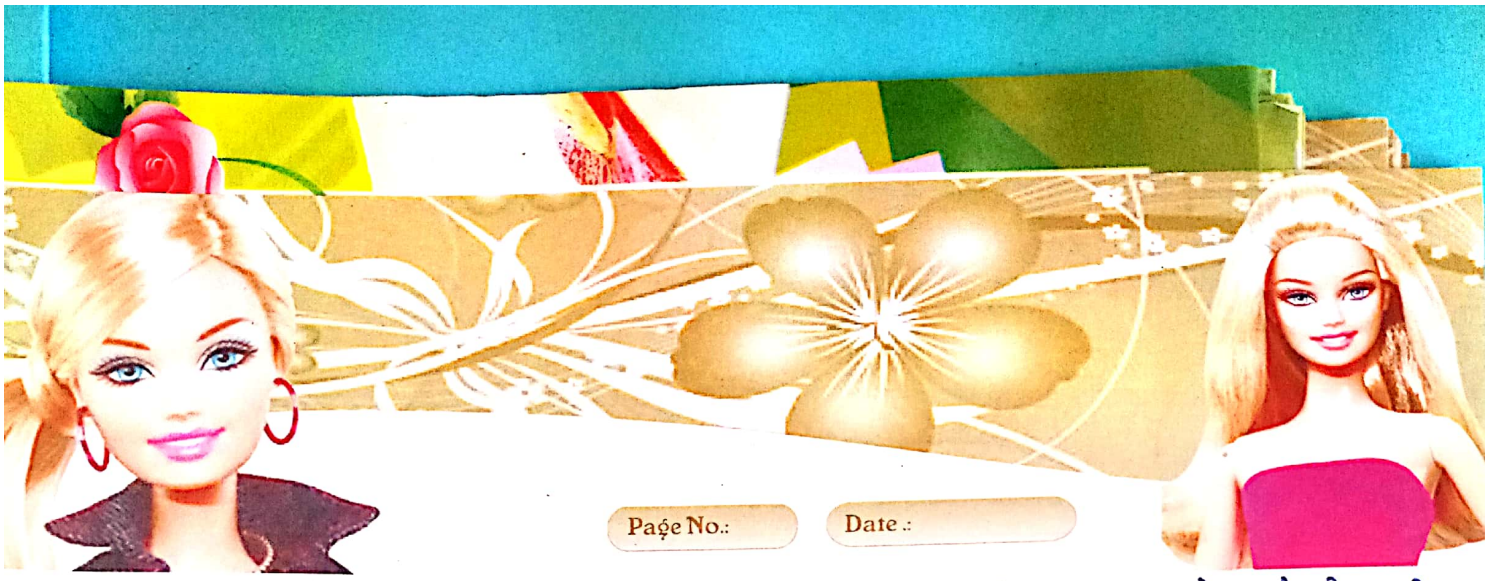

Page No.: Date :

भावपक्ष। बिहारी श्रृंगारी कवि है श्रृंगार के दोनो पक्षों-संयोग और वियोग में से संयोग पक्ष में इनकी वृत्तियाँ अधिक रममाण हुई है वियोगपक्ष के लिये हृदय की सहानुभूति और द्रवणशीलता की आवश्यकता होती है जो बिहारी के पास नही थी विरह में उन्होने सारी शक्ति ऊहात्मकता और अतिशयोक्ति में लगा दी है जिससे विरह वर्णन हास्यास्पद बन पड़ा है किंतु बिहारी अनुराग के कवि होने के कारण इनका मन मिलन पक्ष में खूब रमा है रूपदर्शन में नायिका के रूप का वर्णन बिहारी का दृष्टि बिंदु है इनकी नायिका प्रेम हो जाने पर गुरुजन और परिजनों की आँख से बचकर भरे बाजार में आँखो से बाते करती है एकांत मे अभिसार के लिए जाती है और झूठमूठ कि (हाँ ना) के बाद रति सुख में लीन हो जाती है

~~बिहा~~ क

कलापक्ष। बिहारी ने दोहा और सोरठा इन मात्रिक छंदों का प्रयोग किया है बिहारी की भाषा अपेक्षाकृत अधिक सुव्यवस्थित और सुडौल ब्रजभाषा है उनकी भाषा की सरलता प्रांजलता और एकरूपता के कारण ब्रजभाषा के परिष्कार का मार्ग प्रशस्त हुआ ऐसी वाग्विदग्धता और भाषा पर अधिकार रखने वाला मुक्तकार अन्यत्र नही मिलता इनकी सतसई की परंपरा पर सतसईयाँ लिखी जा रही है इसीमे बिहारी का योगदान और महत्वपूर्ण होता है

Seen